ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJARASEM.2023.1004050 |

मणिमधुकर के काव्य में करुण संवेदन

डॉ. मनोज कुमार शर्मा

सहायक आचार्य 'VSY' हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, पूगल
बीकानेर (राजस्थान)

हिन्दी–राजस्थानी के चर्चित कवि मणिमधुकर का साहित्य जगत् में महत्वपूर्ण स्थान है। मणिमधुकर ने अपनी रचनात्मक ऊर्जा की आँच से राजस्थान ही नहीं हिन्दी के युवा लेखन को ऊष्मा दी। इनके काव्य में आम जन–जीवन की संवेदनशील अभिव्यक्ति हैं। मणिमधुकर नये दौर के कवि हैं, जिससे नयी कविताओं में उनका स्वर सामान्य जन–जीवन की समस्याओं को उजागर करना रहा है, कवि आम आदमी के जीवन संघर्ष को लेकर हिन्दी साहित्य जगत में चर्चित रहे हैं। इन्होंने अपनी सुख–दुःख की परिधि से निकलकर आम आदमी के दर्द को अनुभूत किया और उसकी संवेदना को रुपायत करने का प्रयास किया। मणिमधुकर ने काल्पनिक जगत में प्रवेश कर प्रकृति, प्रेम, सौन्दर्य, आनन्द आदि के चित्रण के साथ–साथ आम जन–जीवन की समस्याओं को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है। इनके काव्य लेखन में करुण संवेदना एवं उमड़ती वेदना का मर्मस्पर्शी अंकन है।

मणिमधुकर ने अपने काव्य में सर्वप्रथम आम आदमी की करुणा को अभिव्यक्ति प्रदान की है। आम आदमी का हर जगह शोषण हो रहा है। वह शोषित है और इन आम शोषितों के प्रति कवि ने 'सूली' कविता में सहानुभूति प्रकट की है–

"वह उन हाथों को पहचानता है,
जो बोरों में गुठलियां मिलाकर बेचते हैं,
और तहमत का
तोहमत का थूक उछालते है सदा
हरी झाडियों की तरफ।"[1]

मणिमधुकर ने अपने काव्य में पुरुष प्रधान समाज में नारी के प्रति हुए अन्याय और शोषण का मार्मिक चित्रण किया है। 'दावत' कविता में नारी जीवन में आये भटकाव एवं आर्थिक विवशता का करुण संवेदन अंकन है। मधुकर जी के सम्पूर्ण साहित्य में नारी की उपस्थिति एक केन्द्र बिन्दु के रूप में हुई है। नारी को उन्होंने जीवन की गतिविधि, जीवन की कुंजी, रसनिधि और धरा की नीति–रीति माना है। और भारतीय समाज में भी नारी को देवी, माँ, सहचरी कहकर नारी के आदर्शवादी दृष्टिकोण की ओर संकेत किया है। परन्तु आधुनिक समाज में

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJARASEM.2023.1004050 |

प्राचीन काल से ही इस दर्शन के ठीक विपरीत नारियों को असम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है। कवि ने नारी की समस्याओं, उसकी विवशता को, उसकी करुणा को 'दावत' कविता में मार्मिक अंक किया है–

"पटवारी आया
सरपंच आया साहूकार आया
और अंत में
परधान भर आए
औरत ने सबसे पुकार–पुकार कर कहा
कुंवरजी
साहब जी
प्यारे मियां
मुझे भी अपने संग ले चलो।"[2]

शोषित, पीड़ित, मजदूर, किसान आदि के दुःख और दर्द की वेदना तथा उसकी करुणा मणिमधुकर ने अपने काव्य संग्रह 'घास का घराना" में की है। आम आदमी जीवित रहने के लिए संघर्षरत है उनकी खाल खरपैल बन चुकी है और। उन्हें किसी मैदान की मार मखौल की फिक्र नहीं। (एड़िया तलुवों मे फट चुकी है फफोले। पानी के बुलबुलों की भांति फूट जाते हैं।"[3]

कवि से निम्न वर्ग की बेचारगी देखी नहीं जाती। इसलिए कवि मणिमधुकर का स्वभाव विद्रोही हो जाता है। 'जन्तर–मन्तर कविता में गरीबों का दुख विषाद, पीड़ा, ग्लानि एवं विवशता को देखकर कवि हताश हो जाते है– यह भूख, भय, भभक, भेड़िया–धसान/यह बिना वजह मारा मारी। नहीं अब और नहीं यह जन्तर–मन्तर।4

महानगरों में अतिव्यवस्तता के कारण सम्बन्धों में बढ़ती दूरियों को कवि ने अपने काव्य में उजागर किया है। शिक्षा के प्रसार और आधुनिकता की अंधी दौड़ के चलते आज पारस्परिक सम्बन्धों में आत्मीयता का भाव नहीं रहा विश्वास अविश्वास में बदल गया है। जिसने चिन्ता, कष्ठ, पीड़ा, निराशा, संघर्ष तथा असन्तोष को जन्म दिया है। आज आपसी रिश्तों में एक रिक्तता सी आने लगी है इन विसंगतियों को मणिमधुकर ने "घास का घराना" काव्य में स्पष्ट किया है–

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJARASEM.2023.1004050 |

'एक वक्त था जब दरख्त जेल में नहीं था
जमीन में था
फिर जमीन फोड़कर बाहर निकला
और जेल में आ गया
ऐसा क्यों होता है क्यों कोई आधा जमीन में
आधा ऊपर रहता है जीता है इसी तरह
ज्यों–ज्यों टहनियाँ फैलती है याददाश्त कमजोर होने लगती है'[5]

मणिमधुकर ने अपने काव्य मैं शोषण से जूझती हुई जनता के प्रति करुणा अभिव्यक्त की है। जागरूक एवं प्रबुद्ध कवि ने भली–भाँति अनुभव कर इस सत्य को उजागर करने का प्रयास किया है कि भ्रष्टाचार के दल–दल में फँसे विभिन्न सरकारी अफसर, पटवारी दरोगा आदि जो सामान्य जनता का शोषण करते है– यथा

"जिन्हें फुर्सत नहीं है, लायसेंस और परमिट
के नम्बर से, रोगन लाली से
उन्हें तुम्हारी छाती से उठे हुए सूल की
चिंता क्यों कर होगी भला।"[6]

सरकार की ऐसी नीतियों से समूची व्यवस्था खण्ड–खण्ड हो जाती है। "खण्ड–खण्ड पाखण्ड पर्व" में भी समूची व्यवस्था ऐसी है कि कवि की इन रचनाओं को पढ़कर कहा जा सकता है कि जनसाधारण की अनुभूतियां कवि की अपनी अनुभूतियां है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. बलराम के हजारों नाम (कविता संग्रह), मणिमधुकर, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 1978, मणिमधुकर 130
2. बलराम के हजारों नाम, मणिमधुकर, पृष्ठ सं.–11
3. घास का घराना (कविता संग्रह), मणिमधुकर, संभावना प्रकाशन रेवंती कुंज, हापुड़, संस्करण 1977, पृष्ठ सं. 80–81.
4. घास का घराना, मणिमधुकर, पृष्ठ सं. 38.
5. घास का घराना (कविता संग्रह), मणिमधुकर, संभावना प्रकाशन रेवंती कुंज, हापुड़ संस्करण 1977, पृष्ठ सं. 42.
6. घास का घराना, मणिमधुकर, पृष्ठ सं.13.

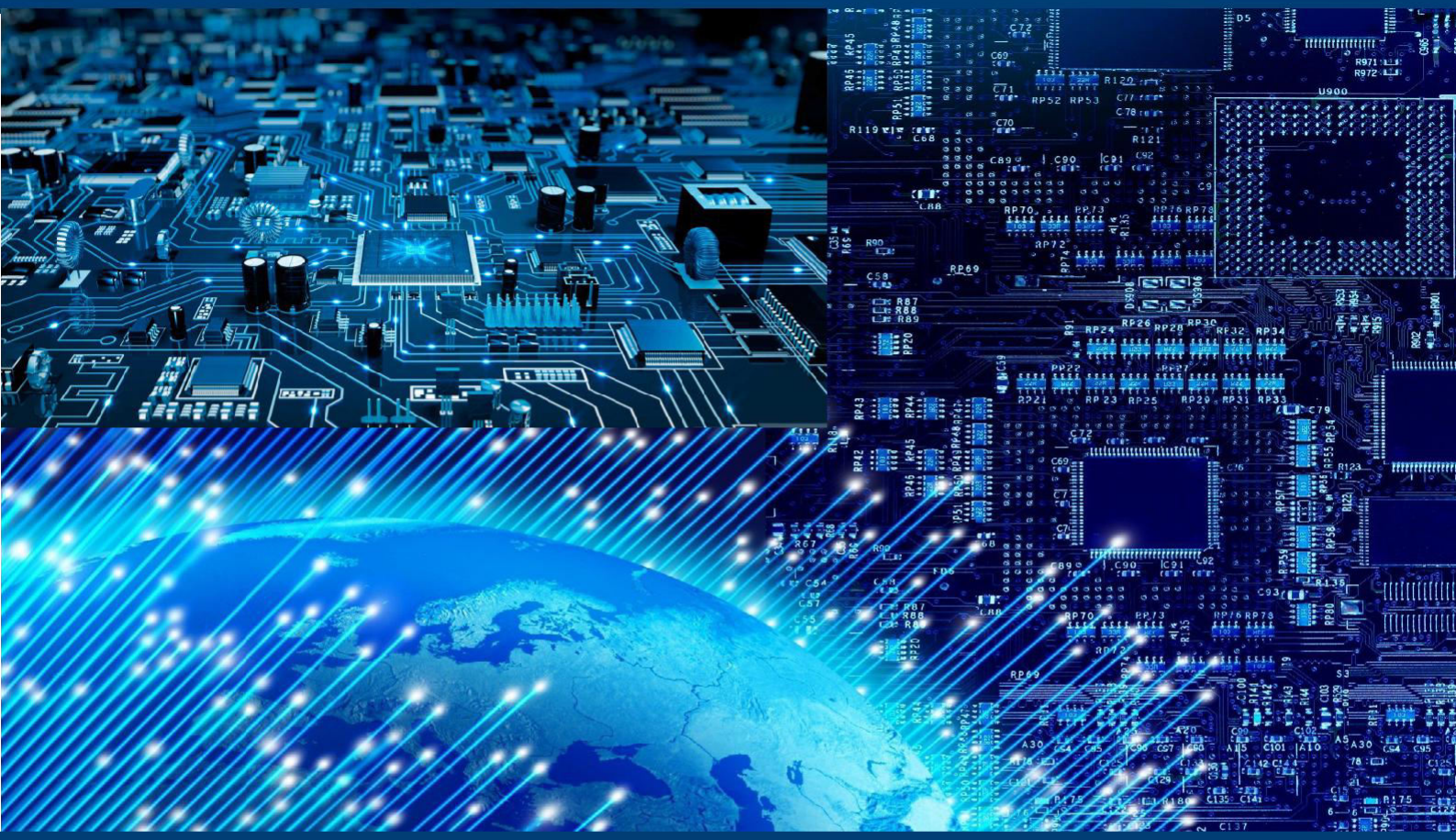

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |